INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 5.71 (SJIF 2021)

प्रेमचंद के उपन्यासों में व्यक्त नारी समस्या और सुझाव

प्रा. डॉ. पटेल शर्मिला सुमंतराय
हिंदी विभाग
श्री रंग नवचेतन महिला आर्ट्‌स कालेज वालीया
ता. वालिया, जि. भरूच (गुजरात)

DOI No. 03.2021-11278686 DOI Link :: https://doi-ds.org/doilink/08.2021-44239797/IRJHIS2108020

प्रस्तावना:

समाज के मूलाघार स्त्री पुरूष है। इन्ही से समाज की रचना होती है। परंतु नारी सदैव मानव परिवार का मुख्य आधार समझी गयी है। प्रत्येक राष्ट्र तथा समाज के सर्वागीण विकास में नारी मुख्य भूमिका का निर्वाह करती है। स्त्री पुरूष दोनों में समान शक्तियाँ हैं। प्रेमचंद ने नारी को सिर्फ प्रेरक शक्ति के रूप में नहीं, बल्कि जीवन के हर क्षेत्र में पुरूष के कंधे से कंधा मिलाकर काम करने वाली साथी के रूप में देखा है। क्षमा, दया, अहिंसा जो पुरूष के लिए उच्चतम आदर्श है, नारी उन्हें पहले से ही आत्मसात किए हुए है। मानवीय गुणों का विकास पुरूष की अपेक्षा स्त्री से अधिक सफलता से हो सकते है। इसलिए स्त्री की श्रेष्ठता को स्वीकारते हुए प्रेमचंद नारी के जीवन विकास की समस्त सुविधाओं को उपलब्ध कराने के पक्ष में है।

प्रेमचंद स्त्री शिक्षा के पक्षधर थे। स्त्री के सर्वागीण विकास के लिए उसका शिक्षित होना जरूरी है। उसका मानना है कि –'जब तक स्त्रियाँ शिक्षित नही होगी और सब कानून अधिकार उनको बराबर न मिल जायेंगे, तब तक महज बराबर काम करने से ही काम नहीं चलेगा ।' शिक्षा के अभाव में वह अपने अधिकारों की सुरक्षा भी नहीं कर पायेगी। 'गबन' उपन्यास में पं, इन्द्रभूषण स्वीकारते है कि –'जब तक स्त्रियों की शिक्षा का काफी प्रचार न होगा, हमारा कभी उद्धार नहीं होगा।' 'गोदान' उपन्यास में विमेन्स लीग समारोह में प्रो, मेहता ने जो भाषण दिया उसमें उन्हो ने भी स्त्री शिक्षा की आवश्यकता पर बल दिया। प्रेमचंदजी स्त्रियों के सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, शैक्षणिक तथा राजनैतिक उत्थान के लिए आवश्यक शिक्षा के साथ साथ समान अधिकारों का भी सदैव अनुमोदन करते है।

स्त्री शिक्षा के हिमायती प्रेमचंद यह नहीं चाहते कि स्त्री पढ. लिखकर नौकरी के लिए दर दर की ठोकरे खाती रहे। गृहस्थ के पूर्ण सुख भोग के लिए स्त्री का नौकरी न करना उत्तम है। किन्तु यदि आपतकाल में स्त्री को जीविकोपार्जन के लिए घर से बाहर निकलना पड. जाये तो उसके लिए भी उसे पूर्ण तत्पर रहना चाहिए।

प्रेमचंद स्त्री–स्वतंत्रता के भी पूर्ण समर्थक रहे है। उसका मानना है कि यदि युवक और युवती का परस्पर शुद्व व्यवहार हो तो स्त्री शिक्षा से भी उन्हें किसी प्रकार हानि पहुंचने की आशंका नहीं है। नारी की स्वतंत्रता के समर्थक होने के साथ साथ प्रेमचंदजी संयम और मर्यादा के भी समर्थक थे। 'गबन' में जालपा के चरित्र का विकास उस समय होता है जब वह रमानाथ को मुक्त कराने के लिए घर से बाहर जाकर संघर्ष करती है। 'कायाकल्प' की रोहिणी बहुविवाह प्रथा के विरूद्ध विद्रोह करती है।

प्रेमचंदजी समाज में प्रचलित पर्दा प्रथा के विरोधी थे। पर्दा प्रथा के कारण स्त्रियों की शारिरीक एवं मानसिक दुर्गति हुई है। ' मैं तुमसे कहता हूं परदा क्यों नहीं छोडती।' परंतु इसका मतलब यह नहीं समझना चाहिए कि वे नारी के असंयत आचरण के पक्षपाती है।

प्रेमचंद नारी स्वातंत्र्य के समर्थक होने पर भी पश्चिमी सभ्यता के आकर्षण में नारी के प्रदर्शन की गुडिया बनने के विरोधी थे। वे मानते थे कि पश्चिमीकरण गुलामी है, जो उसे सामंती बंधनो से निकालकर पूँजीवादी जंजीरों में जकड लेता है। गोदान की मिस मालती इसी प्रकार की सोसायटी गर्ल है, जो समाजसेवा का व्रत न लेने तक जीवन से असंतुष्ट ही रहती है। नारी के संबंध में वे रूढि.वादी नहीं है। उनकी आर्दश नारी गोविंदी है, मिस मालती नहीं। वे किसी भी अवस्था, वर्ग या जाति में नारी की चरित्रहिनता को पसंद नहीं करते इसलिए 'सेवासदन' की सुमन व 'गबन' की जालपा को समाजसेवा में लगाते हैं। 'प्रेमाश्रम' की गायत्री से प्रायश्चित कराते है, इतना ही नहीं बलात्कार की शिकार मुन्नी भी पति पुत्र पर अपनी छाया नहीं पड.ने देती।

प्रेमचंद पूर्ण व्यक्तित्व के विकास के लिए विवाह की अनिवार्यता को स्वीकार करते है। ' प्रतिज्ञा' में प्रो. दीनानाथ कहते है– " मैने कभी अविवाहित जीवन को आर्दश नहीं समझा। वह आदर्श हो ही कैसे सकता है? अवास्तविक वस्तु कभी आदर्श हो ही नहीं सकती है। प्रेमचंद ने अपने साहित्य में किसी भी विवाह योग्य स्त्री को आजीवन कुँवारी चित्रित नहीं किया। मिस पद्मा, मिस मालती आदि ने आजीवन विवाह न करने का विचार तो किया, लेकिन अंत में वे अपने इस विचार पर अडिग न रह सकी। उनका चारित्रिक पतन अंत में लेखक ने चित्रित किया है। उनकी दृष्टि में अविवाहित रहने से लाभ के बदले हानियाँ ही हुई है।

प्रेमचंद ने कर्मक्षेत्र में निरंतर आगे बढने के लिए दांपत्य जीवन को नितांत आवश्यक माना है, क्योंकि कर्मक्षेत्र में यश का सेहरा भोगियों के सिर पर बँधा है। प्रभुसेवक कहता है–

'' जिस प्रकार कुछ व्रतधारियों के निराहार और निर्जल रहने से अन्न और जल की उपयोगिता में बाधा नहीं पडती उसी प्रकार दो चार योगियों के त्याग से दांपत्य जीवन त्याज्य नहीं हो जाता। '' अतः विवाह स्त्री पुरूष के लिए उपयोगी विधान है। वह एक आदार्श समझौता है, और उसका ऊँचा आर्दश – उसकी पवित्रता एवं स्थिरता में है। इसके लिए अनेक प्रकार के ढोंग तथा रूढ़ियों का उन्हो ने सर्वत्र विरोध किया है। 'कायाकल्प' में मनोरमा–जो विवाह लडकी की इच्छा के विरूद्ध किया जाता है, उसे विवाह नहीं समझती। 'गोदान' के प्रो. मेहता के अनुसार शादी के विषय में प्रतिष्ठा की कोई बात नहीं। बालिग लडके–लडकियों को स्वतंत्रता होनी चाहिए।

अनमेल विवाह के प्रति प्रेमचंद के मन में गहरी चिंता है। नारी की दासता व शोषण के अनेक रूपों में से एक अनमेल विवाह है, जिसका शिकार सिर्फ नारी रही है। प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में अनमेल विवाह से उत्पन्न कटु परिस्थितियों और उनके दु:खद परिणामों का बडा विशद चित्रण किया है। 'वरदान', 'सेवासदन' व 'निर्मला' उपन्यासों की नायिकाएँ अनमेल विवाह की त्रासदी भोगती है। "प्रतिज्ञा" "गबन" "कर्मभूमि" उपन्यासों में भी प्रेमचंदजी ने अनमेल विवाह की समस्या को उजागर किया है।अनमेल विवाहआयु, आर्थिक स्तर, आचार–विचार, घर्म व प्रकृति भेद आदि के आघार पर कई स्तरों से संबंघ हो सकते है। घर्म के स्तर पर अनमेल विवाह प्रायः प्रचलित नहीं है, इसलिए प्रेमचंद ने भी "रंगभमि" में हिंदू विनय और ईसाई सोफिया का प्रेम तथा "कर्मभूमि" में अमर और मुस्लिम सकीना का प्रेम तो दिखाया है, किंतु विवाह नहीं दिखाया। आर्थिक स्तर पर अनमेल विवाह की समस्या वही जटिल होती है जहॉ संपन्न घर की कन्या गरीब घर में जाती है। जैसे "गबन" की जालपा को ससुराल में आभूषण न मिलने से समस्या उत्पन्न हुई। "गोदान" की रूपा प्रौढ रामसेवक से विवाह करके प्रसन्न रही क्योंकि उसके लिए पैसा सबसे बडी चीज थी।

'सेवासदन' की नायिका सुमन भी अनमेल विवाह के कारण वेश्या बन जाती है। दहेज की कमी के कारण सुमन की माँ अपनी रूपवती, शिक्षित और योग्य पुत्री का विवाह आधेड. असंस्कारी और सिर्फ पंद्रह रूपये मासिक पाने वाले दुहाजू गजानन के साथ कर दिया। परिणाम स्वरूप सुमन दु:खी और असंतुष्ट रहने लगी और पति उस पर शंका और संदेह करने लगा, जिसकी अंतिम परिणति पति द्वारा सुमन को घर से निकालने और उसके वेश्या बनने की विवशता में हुई।

'निर्मला' उपन्यास की नायिका के जीवन की त्रासदी दहेज के अभिशाप स्वरूप होनेवाले आयुगत बेमेल विवाह का भीषणतम रूप है। निर्मला के पिता की अचानक हत्या होने पर उसके मंगेतर डॉ़ भुवन मोहन और उसके पिता भालचंद ने दहेज न मिलने की संभावना के कारण विवाह से इन्कार कर दिया। परिणाम स्वरूप षोड्सी, रूपवती तथा गुणशील निर्मला

का विवाह उसकी विधवा माँ को तीन बच्चों के बाप के साथ करना पडा। ऐसे व्यक्ति के साथ विवाह करके निर्मला को घोर मानसिक व शारिरीक ग्लानि की यातना झेलनी पडी। वह आजीवन यौन–अतृप्ति के विष का पान करती रही। धृणा, तिरस्कार, संदेह, उपेक्षा, गरीबी और बिमारी सारे दु:खो को झेलकर अपनी छोटी सी पुत्री को ननद को सौंपकर इक्कीस वर्ष की अल्वायु में चल बसी। मृत्यु शैया पर पडी निर्मला ने अपनी पुत्री के संबंध में अपनी अंतिम इच्छा ननद के पास इस प्रकार व्यक्त की– '' चाहे कवाँरी रखिएगा, चाहे विष देकर मार डालिएगा पर कुपात्र के गले न मठियेगा।'' यही प्रेमचंद का अनमेल विवाह के विरूद्ध संदेश है। आयुगत अनमेल विवाह का मुख्य कारण धृणित दहेज प्रथा है, जिसके कारण रूप, गुण व कन्या का कोई महत्व न होकर सिर्फ धन का महत्व रह जाता है।

प्रेमचंदजी जाति–पाति, छुआ–छुत, धनी–निर्धन, अवर्ण–सवर्ण एवं ऊँच–निच के पक्षधर नहीं है, फिर भी जब भी और जहाँ उन्हों ने अर्न्तजातिय, अज्ञात–वंशीय एवं असर्वण–वर्णीय स्त्री–पुरूष के विवाह का प्रश्न उपस्थित किया है, वहाँ उनकी लेखनी अधिकांश स्थानों पर अड़–सी गयी है। केवल 'गोदान' की झुनिया तथा 'वरदान' की माधवी के कुछेक प्रसंग ही ऐसे है की जहाँ प्रेमचंद ने इस क्षेत्र में अतिशय साहस का परिचय दिया है।

प्रेमचंद विधवा नारी की जीवन दशाओं के प्रति सचेत है। उन्होंने विधवा समस्या के कारणों में दहेज के कारण अनमेल विवाह सामाजिक कुरीति के प्रतिक बाल विवाह, वृद्धविवाह तथा पौष्टिक आहार एवं रोगोपयोगी औषधी के अभाव मे अकाल मृत्यु आदि को ही गिनाया है। समाज में विधवा स्त्री की स्थिति परकटे पक्षी के समान थी। उसका हँसना, बोलना, खाना, खेलना, जीना तथा मरना सबकुछ पति पर निर्भर होता है। 'वरदान' की नायिका विरजन के विधवा होने पर प्रेमचंद लिखते है– ''सौभाग्यवती स्त्री के लिए पति संसार की सबसे बडी प्यारी वस्तु है। वह उसीके लिए जीती है, उसी के लिए मरती है। उसका हँसना, बोलना उसीको प्रसन्न करने के लिए होता है। उसका सोहाग जीवन है और सोहाग का उठजाना उसके जीवन का अंत है। हिंदू समाज में पुरूष और स्त्रीयों के लिए प्रचलित दुहरे नैतिक मापदंडो का विधवा जीवन सबसे दयनीय उदाहरण है। पुरूषों का विधुर होने पर चाहे वे वृद्ध हों, कई संतानों का पिता हो, कुमारी कन्याओं से विवाह करने का उनको अधिकार है। उन्हें कई बार विधुर होने पर भी पुनर्विवाह करने की अनुमति है। किंतु नारी यदी बचपन में ही पति के दर्शन किए बिना विधवा हो जाए तो भी उसके लिए पुनर्विवाह के बारे में सोचना तक घोरतम पाप था और सामान्य जीवन जीना हराम था।

समाज में सबसे ज्यादा दु:खी, रूढिग्रस्त, मध्यमवर्गीय विधवाएँ थी, ये वैधव्य की ज्वाला में तिल तिल अपना जीवन होम कर रही थी। प्रेमचंद ने इसी वर्ग की विधवाओं का सर्वाधिक चित्रण किया है। मंदिरों में देवदासियों के साथ विहार करनेवाले, वेश्याओं के नाच को

अनुमति देनेवाले, बडे – बडे तिलकधारी, पंडे – पुंजारी इन पर तरह तरह के बंधनों की दुहाई देते थे, किंतु अवसर मिलने पर इनके साथ गुलछरें उडाने से नहीं चूकते। प्रेमचंद ने अपने उपन्यास प्रेमाश्रम में विधवा "रामकली" के साथ मंदिर के पुजारियों के द्वारा किए गये अनाचार रामकली की मार्मिक वेदना और उसकी मनोवैज्ञानिक दशा का वर्णन किया है। पति की मृत्यु के पश्चात् किस प्रकार एक – एक करके सारे अधिकार विधवा स्त्री के हाथों से छिन जाते है। एक और उन्हें समस्त मानवीय अधिकारों से वंचित रखा जाता है, दूसरी और समाज के कामांध नरपिशाच उनके सतीत्व को लूटने, उन्हें अपने जाल में फँसाने के लिए तरह तरह की चाले चलते है। "प्रतिज्ञा" उपन्यपस में प्रेमचंद ने लोगों की इसी वृत्ति के बारे में लिखा है – "जनता को उनके विषय में नीची से नीची धारणा करने में देर नहीं लगती। मानो कुवासना ही वैधव्य की स्वाभाविक वृत्ति है, मानो विधवा हो जाना मन की सारी दुर्वासनाओं, सारी दुर्बलताओं का उभड आना है।

प्रेमचंद किसी भी वर्ग, अवस्था या जाति की स्त्री की चारित्रहिनता सहन नहीं कर पाते। पातिवृत प्रेमचंद के लेखन का मूल स्वर है। अतः "कायाकल्प" की गायत्री ने जब इस सीमा का अतिक्रमण किया तो प्रेमचंद ने जीवन के अंतिम दिनों तक उन्हे रुलाकर उनकी इस दुर्बलता का प्रायश्चित करवाया है।

प्रेमचंद वेश्यावृति के लिए स्त्री को उत्तरदायी न ठहराकर उनकी इस नीच वृत्ति के लिए विवश करनेवाली परिस्थितियों को ही दोषी ठहराते है। वेश्यावृत्ति का मूल कारण धर, परिवार और समाज में नारी को उचित सम्मान नहीं मिलना है। नारी विवाह के बाद संपूर्ण हृदय से पति को प्रेम करना अपना कर्तव्य समझकर आत्मसमर्पण करती है और पतिवृत धर्म का पालन करती है। किंतु यदि पति अविश्वास करता है, संदेह करता है या उसका अपमान करता है तो सुमन जैसी लाखों निर्दोष तथा स्वाभिमानी स्त्रियाँ जीवन निर्वाह का उचित साधन न मिलने परवेश्यावृत्ति अपनाने को विवश होती है। गोदान में मिर्जा – खुर्शेद कहते है – "रुप के बाजार में वही स्त्रीयाँ आती है जिन्हें या तो अपने घर में किसी कारणवश सम्मानपूर्ण आश्रय नहीं मिलता या तो आर्थिक कारणों से मजबूर हो जाती है। अगर ये दोनों प्रश्न हल हो जाएँ तो बहुत कम औरतें इस भाँति पतित हो।"

प्रेमचंदजी के लेखन का यह मूल आधार रहा है कि नारी चाहे सवर्ण हो या असवर्ण, यदि उसके अंदर चारित्रिक दृढता है तो वह अपने लक्ष्य में अवश्य सफल होगी। अतः स्त्री को सदैव हर संभव प्रयत्न से अपने चरित्र की रक्षा करनी चाहिए। इसी भाव का निर्वाह प्रेमचंद के नारी – पात्रों में सर्वत्र हुआ है। चाहे वे विवाहित स्त्रियाँ हो अथवा अविवाहित प्रेमिकाएँ।

प्रेमचंद के साहित्य में नारी – प्रेम के उस स्वरुप के, जिससे वह सरस, आह्लादक, आकर्षक एवं प्रेरणाप्रद बन जाता है, उसके अनेक उदाहरण उपलब्ध है। कहीं वह प्रेम माता के

निर्विकार वात्सल्य के रुप में छलकता है, तो कहीं पति – प्रेम के रुप में प्रवाहित हुआ है। कहीं प्रेमिका की भीनी चितवन के रुप में उसने अपने प्रेमी को छला है, तो कही वह राष्ट्रीय भावना से उद्‌बुद्ध होकर राष्ट्र की पावन बलीवेदी पर समर्पित हो गया है। लेकिन यह उसकी सर्वोपरी विशेषता रही है कि वह सर्वत्र पवित्र बना रहा। कहीं पर भी उसमें आंशिक अपावनता का अंश भी नहीं आ पाया है।

इस प्रकार यह देखा गया है कि प्रेमचंद ने अपने साहित्य में समग्र नारी – जीवन की सूक्ष्मताओं को बडी सफलता के साथ समेटने का प्रयत्न किया है।

सहायक ग्रंथ:

1. गबन - उपन्यास प्रेमचंद

2. गोदान - वही

3. प्रतिज्ञा - वही

4. कायाकल्प - वही

5. निर्मला - वही

5. रंगभूमि - वही

6. वरदान - वही

7. सेवासदन - वही

8. प्रेमाश्रम - वही

9. कर्मभूमि - वही